CBSE Class 11 History Important Questions Chapter 1 लेखन कला और शहरी जीवन

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
मेसोपोटामिया किन नदियों के बीच स्थित है?
उत्तर:
मेसोपोटामिया फरात तथा दज़ला नदियों के बीच स्थित है।

प्रश्न 2.
वर्तमान में मेसोपोटामिया किस गणराज्य का हिस्सा है?
उत्तर:
वर्तमान में मेसोपोटामिया इराक गणराज्य का हिस्सा है।

प्रश्न 3.
मेसोपोटामिया में प्रचलित भाषाओं के नाम लिखिए।
उत्तर:
सुमेरियन, अक्कदी तथा अरामाइक भाषाएँ।

प्रश्न 4.
सभी पुरानी व्यवस्थाओं में कहाँ की खेती सबसे अधिक उपज देने वाली हुआ करती थी?
उत्तर:
दक्षिणी मेसोपोटामिया की।

प्रश्न 5.
शहरी जीवन की दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
उत्तर:
(1) श्रम – विभाजन तथा
(2) व्यापार।

प्रश्न 6.
प्राचीन काल में मेसोपोटामिया में व्यापार के लिए विश्व मार्ग के रूप में कौनसा जल मार्ग काम करता
उत्तर:
फरात नदी जलमार्ग।

प्रश्न 7.
मेसोपोटामिया की लिपि क्या कहलाती थी ?
उत्तर:
क्यूनीफार्म अथवा कीलाकार।

evidyarthi
https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 8.
मेसोपोटामिया की सबसे पुरानी ज्ञात भाषा कौनसी थी ?
उत्तर:
सुमेरियन भाषा।

प्रश्न 9.
मेसोपोटामिया की परम्परागत कथाओं के अनुसार मेसोपोटामिया में सर्वप्रथम किस राजा ने व्यापार और लेखन की व्यवस्था की थी ?
उत्तर:
उरुक के राजा एनमार्कर ने।

प्रश्न 10.
मेसोपोटामियावासियों के दो प्रमुख देवताओं के नाम लिखिए।
उत्तर:
(1) उर (चन्द्र देवता) तथा
(2) इन्नाना (प्रेम व युद्ध की देवी)।

प्रश्न 11.
मारी नगर के समृद्ध होने का क्या कारण था ?
उत्तर:
मारी नगर के व्यापार का उन्नत होना।

प्रश्न 12.
मेसोपोटामिया के प्रसिद्ध महाकाव्य का नाम लिखिए।
उत्तर:
गिल्गेमिश महाकाव्य।

प्रश्न 13.
नैबोनिडस कौन था?
उत्तर:
नैबोनिडस स्वतन्त्र बेबीलोन का अन्तिम शासक था।

प्रश्न 14.
यायावर से क्या तात्पर्य है ?
उत्तर:
यायावर गड़रिये खानाबदोश होते थे।

प्रश्न 15.
मेसोपोटामिया का नाम यूनानी भाषा के किन शब्दों से बना है ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया यूनानी भाषा के दो शब्दों – 'मेसोस' तथा 'पोटैमोस' से बना है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 16.
बाइबल के अनुसार जल-प्लावन के बाद परमेश्वर ने किस नाम के मनुष्य को चुना ?
उत्तर:
नोआ नाम के मनुष्य को।

प्रश्न 17.
'क्यूनीफार्म' से आप क्या समझते हैं ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया की लिपि 'क्यूनीफार्म' कहलाती थी।

प्रश्न 18.
'क्यूनीफार्म' शब्द की उत्पत्ति किन शब्दों से हुई है ?
उत्तर:
क्यूनीफार्म शब्द लातिनी शब्द क्यूनियस (खूँटी) और 'फोर्मा' (आकार) से बना है।

प्रश्न 19.
मेसोपोटामिया का दक्षिणी भाग क्या कहलाता था ?
उत्तर:
रेगिस्तान।

प्रश्न 20.
उरुक से क्या अभिप्राय है?
उत्तर:
उरुक मेसोपोटामिया का एक अत्यन्त सुन्दर मंदिर शहर था।

प्रश्न 21.
मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ बताइए।
उत्तर:
मेसोपोटामिया का शाब्दिक अर्थ है-दो नदियों के बीच में स्थित प्रदेश

प्रश्न 22.
मेसोपोटामिया की सभ्यता अपनी किन विशेषताओं के लिए प्रसिद्ध है?
उत्तर:
मेसोपोटामिया की सभ्यता अपनी सम्पन्नता, शहरी जीवन, विशाल एवं समृद्ध साहित्य, गणित तथा खगोल विद्या के लिए प्रसिद्ध है।

प्रश्न 23.
यूरोपवासियों के लिए मेसोपोटामिया क्यों महत्त्वपूर्ण था ?
उत्तर:
यूरोपवासियों के लिए मेसोपोटामिया इसलिए महत्त्वपूर्ण था क्योंकि बाइबिल के प्रथम भाग 'ओल्ड टेस्टामेंट' में इसका उल्लेख कई सन्दर्भों में किया गया है।

प्रश्न 24.
मेसोपोटामिया में पुरातत्त्वीय खोज कब शुरू हुई? वहाँ किन दो स्थलों पर उत्खनन कार्य किया गया?
उत्तर:
(1) मेसोपोटामिया में पुरातत्त्वीय खोज 1840 के दशक में हुई।
(2) यहाँ उरुक तथा मारी में उत्खनन कार्य कई दशकों तक चलता रहा।

प्रश्न 25.
मेसोपोटामिया में खेती कब शुरू हो गई थी ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया में 7000 से 6000 ई. पूर्व के बीच खेती शुरू हो गई थी।

प्रश्न 26.
मेसोपोटामिया (इराक) के किस भाग में सबसे पहले नगरों तथा लेखन प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया के दक्षिणी भाग में सबसे पहले नगरों तथा लेखन प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ।

प्रश्न 27.
मेसोपोटामिया के रेगिस्तानों में शहरों का प्रादुर्भाव क्यों हुआ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया के रेगिस्तानों में शहरों के लिए भरण-पोषण का साधन बन सकने की क्षमता थी। फरात तथा दजला नामक नदियाँ अपने साथ उपजाऊ मिट्टी लाती थीं ।

प्रश्न 28.
मेसोपोटामिया के प्राचीनतम नगरों का निर्माण कब शुरू हुआ ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया के प्राचीनतम नगरों का निर्माण कांस्य युग अर्थात् 3000 ई. पूर्व में शुरू हुआ था।

लघूत्तरात्मक प्रश्न

प्रश्न 1.
मेसोपोटामिया की स्थिति तथा इसके प्राथमिक इतिहास पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
मेसोपोटामिया फरात और दजला नामक नदियों के बीच स्थित है। यह प्रदेश आजकल इराक गणराज्य का हिस्सा है। प्रारम्भ में इस प्रदेश को मुख्यतः इसके शहरीकृत दक्षिणी भाग को सुमेर तथा अक्कद कहा जाता था। 2000 ई.पू. के बाद दक्षिणी क्षेत्र को बेबीलोनिया कहा जाने लगा। 1100 ई. पू. में असीरियाई लोगों ने उत्तर में अपना राज्य स्थापित कर लिया।

अत: 1100 ई. पू. से यह क्षेत्र असीरिया कहा जाने लगा। मेसोपोटामिया की प्रथम ज्ञात भाषा सुमेरियन थी। लगभग 2400 ई. पूर्व में अक्कदी भाषा का प्रचलन हो गया। 1400 ई. पूर्व से अरामाइक भाषा का प्रचलन शुरू हुआ। यह भाषा हिब्रू से मिलती-जुलती थी और 1000 ई.पू. के बाद व्यापक रूप से बोली जाने लगी थी।

प्रश्न 2.
यूरोपवासी मेसोपोटामिया को महत्त्वपूर्ण क्यों मानते थे?
उत्तर:
यूरोपवासी मेसोपोटामिया को महत्त्वपूर्ण मानते थे क्योंकि बाइबल के प्रथम भाग 'ओल्ड टेस्टामेन्ट' में इसका उल्लेख अनेक सन्दर्भों में किया गया है। उदाहरण के लिए ओल्ड टेस्टामेन्ट की 'बुक ऑफ जेनेसिस' में 'शिमार' का उल्लेख है जिसका अर्थ सुमेर से है। यूरोप के यात्री और विद्वान लोग मेसोपोटामिया को एक प्रकार से अपने पूर्वजों की भूमि मानते थे।

प्रश्न 3.
बाइबल में उल्लिखित जल-प्लावन की घटना का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
बाइबल के अनुसार पृथ्वी पर सम्पूर्ण जीवन को नष्ट करने वाला जल – प्लावन हुआ था । किन्तु ईश्वर ने जल-प्लावन के पश्चात् भी जीवन को पृथ्वी पर सुरक्षित रखने के लिए नोआ नामक एक व्यक्ति को चुना । नोआ ने एक अत्यन्त विशाल नौका का निर्माण किया और उसमें सभी जीव-जन्तुओं का एक – एक जोड़ा रख दिया। जल-प्लावन के समय नौका में रखे सभी जोड़े सुरक्षित बच गए परन्तु बाकी सब कुछ नष्ट हो गया।

प्रश्न 4.
मेसोपोटामिया के परम्परागत साहित्य में वर्णित 'जल – प्लावन आख्यान' का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
मेसोपोटामिया के परम्परागत साहित्य में वर्णित 'जल – प्लावन आख्यान' में बताया गया है कि एक बार देवता मनुष्य जाति को नष्ट करने पर उतारू हो गए परन्तु एनकी ने जिउसूद्र नामक एक व्यक्ति को यह रहस्य बता दिया । जिउसूद्र ने एनकी के आदेशानुसार एक विशाल नौका बनाई और उसे अनेक जीवों के जोड़ों और अन्नादि से भर लिया । अपने परिवार को भी उसने नाव पर चढ़ा लिया। फिर भीषण जल-प्लावन आया जो सात दिन तक चलता रहा। जिउसूद्र ने देवताओं को बलि दी जिससे वे उस पर बहुत प्रसन्न हुए। उन्होंने उसे अमृत्व प्रदान किया और दिलमुन पर्वत पर उसे स्थान दिया।

प्रश्न 5.
इराक की भौगोलिक स्थिति का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
इराक भौगोलिक विविधता का देश है। इसके पूर्वोत्तर भाग में हरे-भरे, ऊँचे-नीचे मैदान हैं जो धीरे-धीरे वृक्षों से ढके हुए पर्वतों के रूप में फैलते गए हैं। यहाँ साफ पानी के झरने तथा जंगली फूल हैं। यहाँ अच्छी फसल के लिए पर्याप्त वर्षा हो जाती है। उत्तर में ऊँची भूमि है जहाँ स्टेपी- घास के मैदान हैं। यहाँ पशु-पालन 'खेती की अपेक्षा आजीविका का अच्छा साधन है। सर्दियों की वर्षा के पश्चात् भेड़-बकरियाँ यहाँ उगने वाली छोटी-छोटी झाड़ियों और घास से अपना भरण-पोषण करती हैं। पूर्व में दजला की सहायक नदियाँ ईरान के पहाड़ी प्रदेशों में जाने के लिए परिवहन के अच्छे साधन हैं। दक्षिणी भाग एक रेगिस्तान है।

प्रश्न 6.
मेसोपोटामिया के दक्षिण भाग (रेगिस्तान) में सबसे पहले नगरों के प्रादुर्भाव के क्या कारण थे?
उत्तर:
मेसोपोटामिया के दक्षिणी भाग (रेगिस्तान) में सबसे पहले नगरों के प्रादुर्भाव के निम्नलिखित कारण थे –
(1) इन रेगिस्तानों में शहरों के लिए भरण-पोषण का साधन बन सकने की क्षमता थी, क्योंकि फरात और दजला

https://www.evidyarthi.in/

नामक नदियाँ उत्तरी पहाड़ों से निकल कर अपने साथ उपजाऊ बारीक मिट्टी लाती रही हैं। जब इन नदियों में बाढ़ आती है अथवा जब इनके पानी का सिंचाई के लिए खेतों में ले जाया जाता है, तब यह उपजाऊ मिट्टी वहाँ जमा हो जाती है।

(2) फरात नदी रेगिस्तान में प्रवेश करने के बाद कई धाराओं में बँटकर
बहने लगती है। कभी-कभी इन धाराओं में बाढ़ आ जाती है। प्राचीन
काल में ये धाराएँ सिंचाई की नहरों का काम देती थीं। इनमें आवश्यकता
पड़ने पर गेहूँ, जौ, मटर, मसूर आदि के खेतों की सिंचाई की जाती थी। इस प्रकार वर्षा की कमी के बावजूद सभी पुरानी सभ्यताओं में दक्षिणी मेसोपोटामिया की खेती सबसे अधिक उपज देती थी।

प्रश्न 7.
मेसोपोटामिया में नगरों के उदय के परिणामस्वरूप कौन-कौनसे प्रमुख परिवर्तन दिखाई दिए?
उत्तर:
मेसोपोटामिया में नगरों के उदय व उनके विकास के परिणामस्वरूप समाज में निम्न प्रमुख परिवर्तन दिखाई दिए –

- नगरों के विकास के परिणामस्वरूप कृषि के साथ-साथ संगठित व्यापार, श्रम विभाजन, वितरण और भंडारण की गतिविधियों को बढ़ावा मिला।
- नगरों के विकास के परिणामस्वरूप ऐसी प्रणाली का प्रादुर्भाव हुआ जिसमें कुछ लोग आदेश देते थे और दूसरे • उनका पालन करते थे।
- शहरी अर्थव्यवस्था को अपना हिसाब-किताब रखने की आवश्यकता हुई । हिसाब-किताब लिखने के लिए कीलाक्षर लिपि का विकास हुआ तथा पट्टिकाओं की आवश्यकता पड़ी।
- नगरों के परिणामस्वरूप मुद्राओं के द्वारा वस्तु-विनिमय शुरू हुआ तथा मुद्रा का प्रचलन हुआ।
- नगरों के उदय के साथ-साथ अन्य प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ प्रचलन में आयीं, जैसे— नक्काशीकारी, बढईगिरी, बर्तन बनाने की कला आदि।

प्रश्न 8.
शहरीकरण के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
अथवा
'श्रम-विभाजन शहरी जीवन की विशेषता है।" स्पष्ट कीजिए।
अथवा
मेसोपोटामिया की सभ्यता का शहरीकरण कैसे हुआ? स्पष्ट कीजिये।
उत्तर:
शहरी अर्थव्यवस्था में खाद्य उत्पादन के अतिरिक्त व्यापार, उत्पादन और भिन्न-भिन्न प्रकार की सेवाओं की भी महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। नगर के लोग आत्म-निर्भर नहीं होते हैं। वे नगर या गाँव के अन्य लोगों द्वारा उत्पन्न वस्तुओं या दी जाने वाली सेवाओं के लिए उन पर आश्रित होते हैं। उनमें आपस में बराबर लेन-देन होता रहता है। सभी लोग एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं। इसलिए श्रम विभाजन होता है जिसके अन्तर्गत लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति एक-दूसरे के उत्पादन अथवा सेवाओं के द्वारा करते हैं। इस प्रकार श्रम विभाजन शहरी जीवन की विशेषता है।

प्रश्न 9.
शहरीकरण के लिए कौनसे महत्त्वपूर्ण कारक आवश्यक होते हैं?
उत्तर:
शहरीकरण के लिए निम्नलिखित कारकों का होना आवश्यक है-

1. प्राकृतिक उर्वरता तथा खाद्य उत्पादन का उच्च स्तर।
2. कुशल जल परिवहन का होना।
3. व्यापारिक गतिविधियों का होना तथा श्रम विभाजन और विशेषीकरण।
4. विभिन्न शिल्पों का विकास।
5. विभिन्न प्रकार की सेवाओं की उपलब्धि।
6. सुव्यवस्थित प्रबन्ध व्यवस्था, जिससे राज्य में शांति व्यवस्था बनी रहे।

प्रश्न 10.
मेसोपोटामिया में कितने प्रकार के नगरों का निर्माण हुआ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया में तीन प्रकार के नगरों का निर्माण हुआ।
यथा –
(1) मंदिर नगर – पहले प्रकार के नगर मंदिर नगर थे। यहाँ पहले मंदिर की स्थापना हुई और फिर उसके इर्द-गिर्द लोग बसते चले गए। उरुक सबसे पुराना मंदिर नगर था।

(2) व्यापारिक नगर – मेसोपोटामिया में कुछ नगरों का विकास व्यापारिक केन्द्रों के रूप में हुआ। व्यापारिक गतिविधियों के कारण लोग व्यापारिक केन्द्रों के इर्द-गिर्द बसते चले गए और वे नगरों के रूप में विकसित हो गए।

(3) शाही नगर – कुछ नगरों का निर्माण सत्ता का केन्द्र अर्थात् राजधानी होने के कारण हुआ।

प्रश्न 11.
शहरी अर्थव्यवस्था में एक सामाजिक संगठन का होना क्यों आवश्यक है?
उत्तर:
शहरी अर्थव्यवस्था में एक सामाजिक संगठन का होना आवश्यक है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित
(1) शहरी विनिर्माताओं के लिए ईंधन, धातु, विभिन्न प्रकार के पत्थर, लकड़ी आदि आवश्यक वस्तुएँ अलग- अलग स्थानों से आती हैं। इनके लिए संगठित व्यापार और भण्डारण की भी आवश्यकता होती है।
(2) शहरों में अनाज और अन्य खाद्य-पदार्थ गाँवों से आते हैं और उनके संग्रह तथा वितरण के लिए व्यवस्था करनी होती है।
(3) नगरों में अनेक प्रकार की गतिविधियाँ चलती रहती हैं जिनमें तालमेल बैठाना पड़ता है। उदाहरणार्थ, मुद्रा काटने वालों को केवल पत्थर ही नहीं, उन्हें तराशने के लिए औजार तथा बर्तन भी चाहिए। इस प्रकार कुछ लोग आदेश देने वाले होते हैं और कुछ उनका पालन करने वाले होते हैं।
(4) शहरी अर्थव्यवस्था में अपना हिसाब-किताब लिखित रूप में रखना होता है। इसके लिए अनेक सक्षम व्यक्तियों की आवश्यकता होती है।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 12.
“वार्का शीर्ष मेसोपोटामिया की मूर्ति कला का एक विश्व प्रसिद्ध नमूना है।” स्पष्ट कीजिए। उत्तर- उरुक नामक नगर में 3000 ई.पू. स्त्री का सिर एक सफेद संगमरमर को तराश कर बनाया गया था। इसकी आँखों और भौंहों में क्रमशः नीले लाजवर्द तथा सफेद सीपी और काले डामर की जड़ाई की गई होगी। इस मूर्ति के सिर के ऊपर एक खाँचा बना हुआ है जो शायद आभूषण पहनने के लिए बनाया गया था । यह मूर्ति अत्यन्त सुन्दर है। यह मूर्तिकला का एक विश्व-प्रसिद्ध नमूना है। इसके मुख, ठोड़ी और गालों की सुकोमल – सुन्दर बनावट के लिए इसकी प्रशंसा की जाती है। यह एक ऐसे कठोर पत्थर में तराशा गया है जिसे बहुत अधिक दूरी से लाया गया होगा।

प्रश्न 13.
मेसोपोटामिया में किन वस्तुओं का आयात और निर्यात किया जाता था ?
उत्तर:

- मेसोपोटामिया में खाद्य – संसाधनों की प्रचुरता होते हुए भी, वहाँ खनिज संसाधनों का अभाव था। इसलिए प्राचीन काल में मेसोपोटामियावासी सम्भवतः लकड़ी, ताँबा, राँगा, चाँदी, सोना, सीपी और विभिन्न प्रकार के पत्थरों को तुर्की और ईरान अथवा खाड़ी – पार के देशों से मँगाते थे।
- ये लोग इन वस्तुओं के बदले में इन देशों को कपड़ा तथा कृषि-उत्पाद का निर्यात करते थे।
- इन वस्तुओं का नियमित रूप से आदान-प्रदान तभी सम्भव था जबकि इसके लिए कोई सामाजिक संगठन हो। दक्षिणी मेसोपोटामिया के लोगों ने ऐसे संगठन की स्थापना करने की शुरुआत की।

प्रश्न 14.
कुशल परिवहन व्यवस्था शहरी विकास के लिए क्यों महत्त्वपूर्ण होती है?
उत्तर:
कुशल परिवहन व्यवस्था शहरी विकास के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती है। अनाज या काठ कोयला भारवाही पशुओं की पीठ पर रखकर अथवा बैल – गाड़ियों में डालकर शहरों में लाना- – ले जाना अत्यन्त कठिन होता है। इसका कारण यह है कि इसमें बहुत अधिक समय लगता है और पशुओं के चारे आदि पर भी काफी खर्चा आता है। शहरी अर्थव्यवस्था इसका बोझ उठाने के लिए सक्षम नहीं होती। जलमार्ग परिवहन का सबसे सस्ता तरीका होता है।

अनाज के बोरों से लदी हुई नावें या बजरे नदी की धारा या हवा के वेग से चलते हैं, जिसमें कोई खर्चा नहीं लगता, जबकि पशुओं से माल की ढुलाई पर काफी खर्चा आता है। प्राचीन मेसोपोटामिया की नहरें तथा प्राकृतिक जलधाराएँ छोटी-बड़ी बस्तियों के बीच माल के परिवहन का अच्छा मार्ग थीं फरात नदी उन दिनों व्यापार के लिए ‘विश्व – मार्ग’ के रूप में महत्त्वपूर्ण थी।

प्रश्न 15.
मेसोपोटामिया में लेखन कला के विकास पर एक टिप्पणी लिखिए।
अथवा
कलाकार लिपि के बारे में आप क्या जानते हैं?
उत्तर:
मेसोपोटामिया के लोग लेखन कला से परिचित थे। उनके पास अपनी लिपि थी। मेसोपोटामिया में जो पहली पट्टिकाएँ पाई गई हैं, वे लगभग 3200 ई.पू. की हैं। उनमें चित्र जैसे चिह्न और संख्याएँ दी गई हैं। वहाँ बैलों, मछलियों, रोटियों आदि की लगभग 5 हजार सूचियाँ मिली हैं। मेसोपोटामिया में लेखन कार्य की शुरुआत तभी हुई

जब समाज को अपने लेन-देन का स्थायी हिसाब रखने की आवश्यकता पड़ी, क्योंकि शहरी जीवन में लेन-देन अलग-अलग समय पर होते थे, उन्हें करने वाले भी कई लोग होते थे और सौदा भी कई प्रकार की वस्तुओं के विषय में होता था। मेसोपोटामिया के लोग मिट्टी की पट्टिकाओं पर लिखा करते थे।

लिपिक चिकनी मिट्टी को गीला करता था और उसे ऐसे आकार की पट्टी का रूप दे देता था, जिसे वह सरलता से अपने एक हाथ में पकड़ सके। वह उसकी सतहों को चिकनी बना लेता था तथा फिर सरकंडे की तीली की नोक से वह उसकी नम चिकनी सतह पर कीलाकार चिह्न बना देता था। धूप में सुखाने पर ये पट्टिकाएँ पक्की हो जाती थीं। इस प्रकार मेसोपोटामिया से कीलाकार लिपि का जन्म हुआ।

पूपन 16.
ऐसोपोटासिया में पुन्दिा निर्माण महत्व बताइए
अथवा
मेसोपोटामिया के प्रारम्भिक धर्म (मन्दिर एवं पूजा) को समझाइये
उत्तर:
5000 ई. पूर्व से दक्षिणी मेसोपोटामिया में बस्तियों का विकास होने लगा था। इन बस्तियों में से प्राचीन मंदिर उहरों का रूप ग्रहण कर लिया। बाहर से आकर बसने वाले लोगों ने अपने गाँवों में कुछ मन्दिरों का निर्माण करना या उनका पुनर्निर्माण करना शुरू कर दिया। सबसे पहला ज्ञात मन्दिर एक छोटा-सा देवालय था जो कच्ची ईंटों का बना हुआ था। मन्दिर विभिन्न प्रकार के देवी – देवताओं के निवास स्थान थे। इन देवी-देवताओं में उर (चन्द्र) तथा इन्नाना (प्रेम व युद्ध की देवी) प्रमुख थे।

ये मन्दिर ईंटों से बनाए जाते थे और धीरे-धीरे इनका आकार बढ़ता गया। इन मन्दिरों के खुले आँगनों के चारों ओर कई कमरे बने होते थे। कुछ प्रारम्भिक मन्दिर साधारण घरों जैसे थे; क्योंकि मन्दिर भी किसी देवता का घर ही होता था। देवता पूजा का केन्द्र-बिन्दु होता था। लोग देवी – देवता को प्रसन्न करने के लिए अन्न- दही, मछली आदि भेंट करते थे। आराध्यदेव सैद्धान्तिक रूप से खेतों, मत्स्य क्षेत्रों और स्थानीय लोगों के पशु-धन का स्वामी माना जाता था।

प्रश्न 17.
मेसोपोटामिया में प्राकृतिक उपजाऊपन होने के बावजूद कृषि को कई बार संकटों का सामना क्यों करना पड़ता था ?
उत्तर:
मेसोपोटामिया में प्राकृतिक उपजाऊपन होने के बावजूद कृषि को कई बार निम्नलिखित कारणों से संकटों का सामना करना पड़ता था-
(1) फरात नदी की प्राकृतिक धाराओं में किसी वर्ष तो बहुत अधिक पानी बह आता था और फसलों को डुबो देता था और कभी-कभी ये धाराएँ अपना मार्ग बदल लेती थीं, जिससे खेत सूखे रह जाते थे।

(2) जो लोग इन धाराओं के ऊपरी क्षेत्रों में रहते थे, वे अपने निकट की जलधारा से इतना अधिक पानी अपने खेतों में ले लेते थे कि धारा के नीचे की ओर बसे हुए गाँवों को पानी ही नहीं मिलता था।

(3) ये लोग अपने हिस्से की नदी में से मिट्टी नहीं निकालते थे, जिससे बहाव रुक जाता था और नीचे वाले क्षेत्रों के लोगों को पानी नहीं मिल पाता था। इसलिए मेसोपोटामिया के तत्कालीन ग्रामीण क्षेत्रों में जमीन और पानी के लिए बार-बार झगड़े हुआ करते थे।

https://www.evidyarthi.in/

प्रश्न 18.
उरुक में हुई तकनीकी प्रगति का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
उरुक के शासक के आदेश से साधारण लोग पत्थर खोदने, धातु – खनिज लाने, मिट्टी से ईंटें तैयार करने और मन्दिरों में लगाने तथा सुदूर देशों में जाकर मन्दिरों के लिए उपयुक्त सामान लाने के कार्यों में जुटे रहते थे। इसके फलस्वरूप 3000 ई.पू. के आस-पास उरुक शहर में अत्यधिक तकनीकी प्रगति हुई। इस तकनीकी प्रगति का वर्णन अग्रानुसार है –
(1) अनेक प्रकार के शिल्पों के लिए काँसे के औजारों का प्रयोग किया जाने लगा।

(2) वास्तुविदों ने ईंटों के स्तम्भ बनाना सीख लिया था क्योंकि बड़े-बड़े कमरों की छतों के बोझ को सम्भालने के लिए शहतीर बनाने के लिए उपयुक्त लकड़ी नहीं मिलती थी।

(3) सैकड़ों लोग चिकनी मिट्टी के शंकु (कोन) बनाने और पकाने के काम में लगे रहते थे। इन शंकुओं को भिन्न-भिन्न रंगों में रंग कर मन्दिरों की दीवारों में लगाया जाता था जिससे वे दीवारें विभिन्न रंगों से आकर्षक दिखाई देती थीं।

(4) उरुक में मूर्तिकला के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण उन्नति हुई। मूर्तियाँ अधिकतर आयातित पत्थरों से बनाई जाती थीं।

(5) कुम्हार के चाक के निर्माण से प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक युगान्तरकारी परिवर्तन आया। चाक से कुम्हार की कार्यशाला में एक साथ बड़े पैमाने पर अनेक एक जैसे बर्तन सरलता से बनाए जाने लगे।

प्रश्न 19.
" मुद्रा (मोहर) सार्वजनिक जीवन में नगरवासी की भूमिका को दर्शाती थी। " स्पष्ट कीजिए।
अथवा
मेसोपोटामिया में मुद्रा – निर्माण कला पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
उत्तर:
मेसोपोटामिया में पहली सहस्राब्दी ई. पूर्व से अन्त तक पत्थर की बेलनाकार मुद्राएँ बनाई जाती थीं। इनके बीच में छेद होता था। इस छेद में एक तीली लगाकर मुद्रा को गीली मिट्टी के ऊपर घुमाया जाता था। इस प्रकार उनसे निरन्तर चित्र बनता जाता था। इन मुद्राओं को अत्यन्तं कुशल कारीगरों द्वारा उकेरा जाता था। कभी-कभी उनमें ऐसे लेख होते थे, जैसे मालिक का नाम, उसके इष्टदेव का नाम और उसकी अपनी पदीय स्थिति आदि।

किसी कपड़े की गठरी या बर्तन के मुँह को चिकनी मिट्टी से लीप-पोत कर उस पर वह मोहर घुमाई जाती थी जिससे उसमें अंकित लिखावट मिट्टी की सतह पर छा जाती थी। इससे उस गठरी या बर्तन में रखी चाजों को मोहर लगाकर सुरक्षित रखा जा सकता था। जब इस मोहर को मिट्टी की बनी पट्टिका पर लिखे पत्र पर घुमाया जाता था, तो वह मोहर उस पत्र की प्रामाणिकता को प्रदर्शित करती थी । इस प्रकार मुद्रा सार्वजनिक जीवन में नगरवासी की भूमिका को प्रकट करती थी।

प्रश्न 20.
मेसोपोटामियावासियों की विवाह – प्रणाली का वर्णन कीजिए।
उत्तर- विवाह करने की इच्छा के सम्बन्ध में घोषणा की जाती थी और कन्या के माता-पिता उसके विवाह के लिए अपनी सहमति प्रदान करते थे। उसके पश्चात् वर पक्ष के लोग वधू को कुछ उपहार देते थे। जब विवाह की रस्म

पूरी हो जाती थी, तब दोनों पक्षों की ओर से एक-दूसरे को उपहार दिये जाते थे और वे एकसाथ बैठकर भोजन करते थे। इसके बाद वे मन्दिर में जाकर देवी-देवता को भेंट चढ़ाते थे। जब नववधू को उसकी सास लेने आती थी, तब वधू को उसके पिता के द्वारा उसकी दाय का भाग दे दिया जाता था।

प्रश्न 21.
मारी नगर के पशुचारकों की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
उत्तर:
2000 ई. पूर्व के बाद मारी नगर शाही राजधानी के रूप में विकसित हुआ। मारी नगर फरात नदी की ऊर्ध्वधारा पर स्थित है। इस ऊपरी क्षेत्र में खेती और पशुपालन साथ-साथ चलते थे। यद्यपि मारी राज्य में किसान और पशुचारक दोनों प्रकार के लोग होते थे, परन्तु वहाँ का अधिकांश भाग भेड़-बकरी चराने के लिए ही काम में लिया जाता था।

पशुचारकों को जब अनाज, धातु के औजारों आदि की आवश्यकता पड़ती थी तब वे अपने पशुओं तथा उनके पनीर, चमड़ा तथा मांस आदि के बदले ये चीजें प्राप्त करते थे। बाड़े में रखे जाने वाले पशुओं के गोबर से बनी खाद भी किसानों के लिए बहुत उपयोगी होती थी। फिर भी मारी राज्य में किसानों तथा गड़रियों के बीच कई बार झगड़े हो जाते थे।

प्रश्न 22.
मारी राज्य में किसानों तथा गड़रियों के बीच झगड़े होने के कारणों की विवेचना कीजिए।
उत्तर:
मारी राज्य में किसानों तथा गड़रियों के बीच कई बार झगड़े हो जाते थे। इन झगड़ों के निम्नलिखित कारण थे –
(1) गड़रिये कई बार अपनी भेड़-बकरियों को पानी पिलाने के लिए किसानों के बोए हुए खेतों से गुजार कर ले जाते थे जिससे किसानों की फसलों को हानि पहुँचती थी।
(2) ये गड़रिये खानाबदोश होते थे और कई बार किसानों के गाँवों पर हमला कर उनका माल लूट लेते थे। इससे दोनों पक्षों में कटुता बढ़ती थी।
(3) दूसरी ओर, बस्तियों में रहने वाले लोग भी इन गड़रियों का मार्ग रोक देते थे तथा उन्हें अपने पशुओं को नदी – नहर तक नहीं ले जाने देते थे।

प्रश्न 23.
"मेसोपोटामिया का समाज और वहाँ की संस्कृति भिन्न-भिन्न समुदायों के लोगों और संस्कृतियों का मिश्रण था।" स्पष्ट कीजिए।
उत्तर:
मेसोपोटामिया के कृषि से समृद्ध हुए मुख्य भूमि – प्रदेश में यायावर समुदायों के झुण्ड के झुण्ड पश्चिमी मरुस्थल से आते रहते थे। ये गड़रिये गर्मियों में अपने साथ इस उपजाऊ क्षेत्र के बोए हुए खेतों में अपनी भेड़-बकरियाँ ले आते थे। गड़रियों के ये समूह फसल काटने वाले श्रमिकों अथवा भाड़े के सैनिकों के रूप में आते थे और समृद्ध होकर यहीं बस जाते थे। उनमें से कुछ तो बहुत शक्तिशाली थे जिन्होंने यहाँ अपनी स्वयं की सत्ता स्थापित करने की शक्ति प्राप्त कर ली थी।

ये खानाबदोश लोग अक्कदी, एमोराइट, असीरियाई तथा आर्मीनियन जाति के थे। मारी के राजा एमोराइट समुदाय के थे। उनकी वेश-भूषा वहाँ के मूल निवासियों से अलग होती थी तथा वे मेसोपोटामिया के देवी-देवताओं का आदर करते थे। उन्होंने स्टेपी क्षेत्र के देवता डैगन के लिए मारी नगर में एक अन्य मन्दिर का निर्माण भी

https://www.evidyarthi.in/

करवाया। इस प्रकार मेसोपोटामिया का समाज और वहाँ की संस्कृति भिन्न-भिन्न समुदायों के लोगों और संस्कृतियों के लिए खुली थी तथा सम्भवतः विभिन्न जातियों और समुदायों के लोगों के परस्पर मिश्रण से ही वहाँ की सभ्यता में जीवन-शक्ति उत्पन्न हो गई थी।

प्रश्न 24.
जिमरीलिम के मारी स्थित राजमहल का वर्णन कीजिए।
उत्तर:
जिमरीलिम का मारी स्थित राजमहल –

1. मारी स्थित विशाल राजमहल वहाँ के शाही परिवार का निवास-स्थान था। इसके अतिरिक्त वह प्रशासन और उत्पादन, विशेष रूप से कीमती धातुओं के आभूषणों के निर्माण का मुख्य केन्द्र भी था।
2. यह राजमहल विश्व में प्रसिद्ध था जिसे देखने के लिए दूसरे देशों के लोग भी आते थे।
3. यह राजमहल 2.4 हैक्टेयर के क्षेत्र में स्थित एक अत्यन्त विशाल भवन था जिसमें 260 कक्ष बने हुए थे।
4. मारी के राजा जिमरीलिम के भोजन की मेज परं प्रतिदिन भारी मात्रा में खाद्य पदार्थ प्रस्तुत किये जाते थे जिनमें आटा, रोटी, मांस, मछली, फल, मदिरा, बीयर आदि सम्मिलित थीं।
5. राजमहल का केवल एक ही प्रवेश-द्वार था जो उत्तर की ओर बना हुआ था। उसके विशाल खुले प्रांगण सुन्दर पत्थरों से जड़े हुए थे।
6. राजमहल में राजा के विदेशी अतिथियों तथा अपने प्रमुख लोगों से मिलने वाले कक्ष में सुन्दर भित्तिचित्र लगे हुए।

evidyarthi